विचार बिन्दु

दान देकर तुम्हे खुश होना चाहिए, क्योंकि मुसीबत दान की दीवार कभी नहीं फांदती। –हज़रत मोहम्मद

मुख्यमंत्री के कुशल नेतृत्व में उपलब्धियों के नये आयाम स्थापित करता राजस्थान

कुशल नेतृत्व और दूरगामी सोच का ही परिणाम है कि दो साल की अल्प अवधि में ही राजस्थान उपलब्धियों के नए आयाम स्थापित करते हुए आगे बढ़ रहा है। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की अथक मेहनत, विजनरी सोच, लोककल्याण को प्राथमिकता और आपणों राजस्थान अग्रणी राजस्थान के संकल्प के साथ आज राजस्थान बीमारु प्रदेश ना होकर देश का अग्रणी प्रदेश बन गया है। सबसे खास बात यह है कि किसी एक क्षेत्र में अव्वल होना एक बात होती है और समग्र उपलब्धियों की इबारत लिखना अलग बात होती है। आज राजस्थान औद्योगिक निवेश, पर्यटन, खनन, एनर्जी, डीबीटी, किसान सम्मान, कृषि विकास, सहकारिता, महिला सशक्तिकरण, चिकित्सा और स्वास्थ्य व इसी तरह के प्रमुख प्रमुख सेक्टर्स में अपनी पहचान बनाकर आगे बढ़ रहा है। ऐसा नहीं है कि यह अपने आप हो गया हो या विरासत में मिला हो बल्कि योजनाबद्ध प्रयासों का ही परिणाम है कि सकारात्मक और विकासात्मक परिणाम प्राप्त हो सके।

मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा के सोच का ही परिणाम रहा कि सरकार बनने के पहले साल में ही राइजिंग राजस्थान का आयोजन कर देश-दुनिया के निवेशकों को राजस्थान की और आकर्षित किया और करीब 35 लाख के निवेश प्रस्तावों पर करार कराने के साथ ही राइजिंग राजस्थान के एक साल पूरे होते-होते करीब 8 लाख करोड़ के निवेश प्रस्तावों की ग्राउण्ड ब्रेकिंग करा दिए गए। यह अपने आप में इसलिए महत्वपूर्ण हो जाता है कि ज्यादातर सरकारों द्वारा ऐसे निवेश सम्मेलनों का आयोजन सरकार के तीसरे-चौथे साल में किए जाते हैं और इसका परिणाम यह होता है कि निवेश करारों के बाद सरकार चुनावी मोड़ पर आ जाती है और सरकार की प्राथमिकता बदल जाती है। अब पहले साल ही राइजिंग राजस्थान जैसे आयोजन होने से उसके सकारात्मक परिणाम प्राप्त होने लगे हैं। यह भी सर्वविदित है कि राजस्थानियों ने देश-दुनिया के कोने-कोने में अपनी व्यावसायिक काबिलियम की धाक जमाने वाले प्रवासी राजस्थानियों को मातृभूमि से जोड़ने की दिशा में प्रतिवर्ष दिसंबर की 10 तारीख को प्रवासी राजस्थानी दिवस मनाने का निर्णय राजस्थान के विकास में प्रवासी राजस्थानियों की भागीदारी तय करने में मील का पत्थर साबित होगा। इसी माह के 10 दिसंबर को जयपुर में आयोजित पहले प्रवासी राजस्थानी दिवस में प्रवासी राजस्थानियों की आशा से अधिक भागीदारी से यह सिद्ध हो गया है कि प्रवासी राजस्थानियों ने मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के इस निर्णय का ना केवल स्वागत किया अपितु सक्रिय भागीदारी निभाते हुए प्रदेश के विकास में सहभागिता का संकल्प दोहराया। यही तो विजन और अपनों को अपनों के साथ जोड़ने का रास्ता होता है। इससे प्रदेश के विकास में ही पंख लगेंगे। डोरी-लोटा लेकर जाने वाले राजस्थानियों ने जिनके बारें में कहा जाता है कि जहां बेलगाड़ी भी नहीं जा सकती वहां मारवाड़ियों ने परचम पहराया है। दरअसल प्रवासी राजस्थानियों को अन्य प्रदेशों में मारवाड़ी ही कह कर संबोधित किया जाता है। निश्चित रुप से प्रवासी राजस्थानी उद्यमी राजस्थान में अपनी मातृभूमि में ओद्यौगिक गतिविधियां संचालित करेंगे और इसका लाभ प्रदेश और प्रदेशवासियों खासतौर से युवाओं को मिलेगा।

> **राइजिंग राजस्थान के एक साल पूरे होते-होते करीब 8 लाख करोड़ के निवेश प्रस्तावों की ग्राउण्ड ब्रेकिंग करा दिए गए। यह अपने आप में इसलिए महत्वपूर्ण हो जाता है कि ज्यादातर सरकारों द्वारा ऐसे निवेश सम्मेलनों का आयोजन सरकार के तीसरे-चौथे साल में किए जाते हैं और इसका परिणाम यह होता है कि निवेश करारों के बाद सरकार चुनावी मोड़ पर आ जाती है और सरकार की प्राथमिकता बदल जाती है। अब पहले साल ही राइजिंग राजस्थान जैसे आयोजन होने से उसके सकारात्मक परिणाम प्राप्त होने लगे हैं।**

बात केवल औद्योगिक निवेश की ही नहीं है अपितु पर्यटन की दृष्टि से भी आज राजस्थान देश-दुनिया की पहली पसंद बन गया है। दिल्ली आने वाला और नहीं तो जयपुर तो आ ही जाता है तो आज जयपुर-उदयपुर खासतौर से वेडिंग डेस्टिनेशन के रुप में दुनिया के मानचित्र पर अपनी पहचान बना चुके हैं। समूचा राजस्थान अब तो छट बारह महीनें पर्यटकों से गुलजार रहने लगा है। पर्यटन की दृष्टि से इसी से समझा जा सकता है कि आईटीबी बर्लिन में पेसिफिक एशिया ट्र्वेल राइटर्स एसोसिएशन द्वारा डेस्टीनेशन ऑफ द ईयर-रॉयल एक्सपीरियंस राजस्थान अवार्ड से नवाजा गया है। इण्डिया टू डे टूरिज्म सर्वे एण्ड अवार्ड 2025 में आमेर फोर्ट को बेस्ट हेरिटेज डेस्टीनेशन, कुंभलगढ़ को बेस्ट माउंटेन डेस्टीनेशन, बीकानेर को बेस्ट कलनरी डेस्टीनेशन अवार्ड से नवाजा गया है। यह तो बानगी मात्र है। घूमर का भव्य आयोजन नवाचारों में से एक है।

खनन के क्षेत्र में आज राजस्थान तेजी से उभरा है। दो साल में ही सर्वाधिक मेजर मिनरल ब्लॉकों की नीलामी कर राजस्थान अग्रणी प्रदेश बन चुका है तो कोणार्क में आयोजित समारोह में राजस्थान को पुरस्कृत किया जा चुका है। 5 स्टार रेटिंग में राजस्थान की पांच माइंस को पहली बार स्थान प्राप्त हुआ है तो क्रिटिकल और स्ट्रेटेजिक मिनरल के डिपोजिट्स राजस्थान में चिन्हित हुए हैं। माइंस मंत्रालय स्वयं मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा संभाल रहे हैं और नवाचारों को प्राथमिकता देते हुए एआईएमएल और रिसाइक्लिंग जैसे कार्यो के अध्ययन के लिए देश की जाने-माने आईआईटी संस्थानों से समन्वय बनाया है। किसान निधि के वितरण में राजस्थान अव्वल प्रदेशों में है तो सहकारिता में नए आयाम स्थापित किए जा रहे हैं। चिकित्सा और स्वास्थ्य के क्षेत्र में सुविधाओं का विस्तार किया गया है तो शिक्षा के क्षेत्र में लगातार सुधार किए जा रहे हैं। रोजगार के नए अवसर विकसित किये जा रहे हैं तो बिना पेपरआउट के परीक्षाएं होने लगी है। तंबाकू नियंत्रण कार्यक्रम में बेस्ट परफार्मिंग स्टेट राजस्थान बन गया है।

राजस्थान ई गवर्नेस 2024 स्वर्ण पदक से सम्मानित हो चुका है। ई फाइलिंग सहित सरकारी दफ्तरों के काम में ई तकनीक के प्रयोग से पारदर्शिता और कार्य निष्पादन को गति मिली है। उज्ज्वला योजना में पहले स्थान पर है तो रिन्यूवल एनर्जी में आज समूचे देश की निगाहें राजस्थान की और है। कुसुम योजना ही नहीं अपितु रुफटाप में भी राजस्थान आगे निकल चुका है। उपलब्धियों की लंबी कतार होने से यह तो सरकार की उपलब्धियों की बानगी मात्र है। इसमें कोई दो राय नहीं होनी चाहिए कि इस सबका श्रेय नायक को ही जाता है और इसमें भी कोई दो राय नहीं कि नायक यानी कि लोकतंत्र में मुख्यमंत्री की सोच और निर्णय क्षमता का ही परिणाम होता है कि बेहतर परिणाम प्राप्त होने लगते हैं। मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा के अथक प्रयासों, निरंतर विकास की सोच, जीरो टॉलरेंस की नीति और प्रदेश को आगे से आगे बढ़ाने की सोच के साथ कार्य करने की मंशा से ही राजस्थान आज देश में परचम फहराने की स्थिति में आया है। इसके लिए निसंकोच सारा श्रेय मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा को जाता है।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ.राजेन्द्र प्रसाद शर्मा
(वरिष्ठ लेखक)

राशिफल शुक्रवार 26 दिसम्बर, 2025

पंडित अनिल शर्मा

पौष मास, शुक्ल पक्ष, षष्ठि तिथि, शुक्रवार, विक्रम संवत 2082, शतभिषा नक्षत्र दिन 9:00 तक, सिद्धि योग दिन 2:00 तक, तैतिल करण दिन 1:43 तक, चन्द्रमा आज रात्रि 3:10 से मीन राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-धनु, चन्द्रमा-कुम्भ, मंगल-धनु, बुध-वृश्चिक, गुरू-मिथुन, शुक्र-धनु, शनि-कुम्भ, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह राशि में।

आज रवियोग प्रातः 9:00 पर समाप्त होगा। कुमार योग प्रातः 9:00 से आरम्भ होगा। आज अनुराधा षष्ठि, पंचक है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर सूर्योदय से 8:35 तक, लाभ 8:35 से 9:52 तक, अमृत 9:53 से 11:10 तक, शुभ 12:27 से 1:45 तक, चर 4:19 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 10:30 से 12:00 तक। सूर्योदय 7:18, सूर्यास्त 5:37 तक

मेष

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक यात्रा संभव है। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

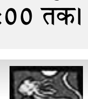

सिंह

परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है।

धनु

परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक यात्रा सफल रहेगी।

वृष

व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। संभावित धन प्राप्त होगा। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी।

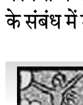

कन्या

स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

मकर

आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। संभावित धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक खर्चों पर नियंत्रण रखें। परिवार में मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं।

मिथुन

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

तुला

व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है। व्यावसायिक मामलों में महत्वपूर्ण परामर्श मिल सकता है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कुंभ

आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। संभावित धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक खर्चों पर नियंत्रण रखें। परिवार में मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं।

कर्क

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। यात्रा में दुर्घटना का भय है।

वृश्चिक

घर-परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। अतिथियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

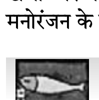

मीन

घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। आज आवश्यक और महत्वपूर्ण मामलों में दुविधा बनी रहेगी। आज अनर्गल कार्यों में समय खराब होगा और मन में असंतोष बना रहेगा।

26 जनवरी से बहू-बेटियों की आज़ादी पर ताला?

सुँधामाता पट्टी का फरमान और संविधान की खुली बेइज़्ज़ती!

मणिमाला शर्मा

ब्लर्ब – यह कोई फैसला नहीं, यह आधी आबादी के अधिकारों पर सीधा हमला है। यह कोई सुधार नहीं बल्कि यह एक सज़ा है। जालोर की सुंधामाता पट्टी पंचायत का हालिया निर्णय कोई अचानक घटी घटना नहीं है, बल्कि उस मानसिकता की निरंतरता है जो वर्षों से ग्रामीण सत्ता संरचनाओं में पलती रही है। यह वही सोच है जो पंचायत को जनप्रतिनिधि संस्था नहीं, बल्कि सामाजिक नियंत्रण का औजार मानती है। जब कोई विशेष समुदाय की पंचायत त्वरित और कठोर निर्णय लेती है, तो वह सिर्फ एक व्यक्ति या परिवार को नहीं, बल्कि पूरे लोकतांत्रिक ढांचे को कटघरे में खड़ा कर देती है। यह सवाल आज सिर्फ सुंधामाता पट्टी का नहीं है। सवाल यह है कि क्या पंचायतें संविधान के अधीन काम करेंगी या फिर परंपरा, जातिगत दबाव और भीड़ की ताल पर फरमान जारी करती रहेंगी।

सुन्धामाता पट्टी के एक गाँव में हुई यह कोई साधारण पंचायत बैठक नहीं थी। यह वह पल था जब जालोर की सुंधामाता पट्टी पंचायत ने खुलेआम यह जता दिया कि कुछ गांवों में आज भी देश का संविधान नहीं, समुदाय विशेष पंचायतों का फरमान चलता है। यह निर्णय ऐसा था जैसे किसी नागरिक के मुंह पर सबके सामने थप्पड़ मार दिया गया हो और फिर कहा गया हो कि यह समाज की मर्यादा के लिए जरूरी था। सवाल यह नहीं है कि पंचायत ने क्या फैसला लिया, सवाल यह है कि उसे यह हक किसने दिया कि वह कानून, न्याय और इंसानियत को एक झटके में किनारे रख दे।

इस पंचायत में हुए निर्णय के अनुसार 26 जनवरी, जिस दिन देश संविधान को अपनाने का जश्न मनाता है, उसी दिन राज्य के जालोर जिले की सुंधामाता पट्टी के 15 गांवों की बहू-बेटियों के हाथों से आज़ादी छीन ली जाएगी। पंचायत के इस तुगलकी फरमान के तहत अब वे कैमरे वाला स्मार्ट मोबाइल फोन इस्तेमाल नहीं कर सकेंगी। शादी, सामाजिक आयोजन या पड़ोसी के घर जाने के समय भी उन्हें केवल की-पैड फोन रखने की अनुमति दी गई है। पढ़ाई करने वाली बच्चियां केवल घर में ही मोबाइल से पढ़ाई कर सकेंगी।

मज़े की बात यह है कि यह निर्णय किसी अदालत या सरकारी आदेश के आधार पर नहीं लिया गया। इसे एक विशेष समुदाय की बैठक में पढ़कर सुनाया गया और सीधे लागू करने का ऐलान किया गया। यहाँ सवाल केवल स्मार्ट मोबाइल का नहीं है, बल्कि यह सवाल है कि महिलाओं की स्वतंत्रता पर किस हक से रोक लगाई जा रही है।

यह मामला जालोर जिले के गाजीपुर गांव से शुरू हुआ, जहां रविवार को एक पंचायत बुलाई गई। इसकी अध्यक्षता पूरी 15 पट्टी के अध्यक्ष सुजनाराम चौधरी ने की। पंचायत में पंच हिम्मताराम ने यह प्रस्ताव पढ़कर सुनाया। यह सामान्य पंचायत का कोई सामान्य प्रस्ताव नहीं था, बल्कि सीधे तौर पर 15 गांवों की महिलाओं और लड़कियों की आज़ादी पर सीधा प्रहार था। पंचायत ने तय किया कि महिलाओं और लड़कियों के लिए स्मार्टफोन पर पूरी तरह रोक होगी। उन्हें केवल की-पैड फोन रखने की अनुमति दी जाएगी और घर के बाहर मोबाइल पूरी तरह प्रतिबंधित रहेगा।

इस निर्णय के समर्थन में क़ल्बी चौधरी समाज के अध्यक्ष ने तर्क दिया कि महिलाओं के मोबाइल रखने से बच्चों की आंखें खराब हो सकती हैं। यह तर्क जितना कमजोर है, उतना ही महिलाओं के प्रति असंवेदनशील भी है। इससे साफ झलकता है कि महिलाओं को दोषी मानकर उनकी स्वतंत्रता सीमित करने की मानसिकता आज भी गहरी है। यह फरमान केवल गाजीपुर तक सीमित नहीं है, बल्कि गाजीपुरा, पावली, कालड़ा, मनोजिया वास, राजीकावास, दातलावास, राजपुरा, कोड़ी, सिदरोड़ी, आलड़ी, रोपसी, खानादेवल, साविधर, भीनमाल के हाथमी की ढाणी और खानपुर जैसे गांवों में भी लागू होगा।

पंचायत का उद्देश्य साफ है- हजारों महिलाओं के हाथों से स्मार्ट मोबाइल छीनकर उनकी निजी आज़ादी पर सीधा नियंत्रण। यह फैसला अचानक नहीं आया। सुंधामाता पट्टी में पहले भी महिलाओं के व्यवहार और आवाजाही पर सामाजिक आदेश दिए जाते रहे हैं। परिवार और महिलाओं से जुड़े फैसले पंचायत बैठकों में तय होते रहे हैं। गलती माने जाने पर सार्वजनिक माफी मंगवाना और आलोचना करना आम रहा है। आधुनिक तकनीक को यहां अक्सर संस्कार बिगाड़ने वाला बताया गया, लेकिन अब पहली बार इसे लिखित नियम बनाकर लागू किया गया है।

आज 21वीं सदी में मोबाइल केवल फोन नहीं है। यह सुरक्षा, जानकारी, शिक्षा और दुनिया से जुड़ने का साधन है। महिलाओं के हाथ से मोबाइल छीनना उन्हें चारदीवारी में कैद करने जैसा है। यह सीधे तौर पर संविधान के अनुच्छेद 21 द्वारा प्रदत्त निजता और स्वतंत्रता के अधिकार पर हमला है।

सबसे शर्मनाक पहलू यह है कि यह नियम केवल बहू-बेटियों पर लागू किया गया है। पुरुषों, लड़कों या बुजुर्गों पर कोई रोक नहीं है। अगर समस्या मोबाइल की है तो नियम सभी के लिए समान क्यों नहीं? अगर चिंता बच्चों की आंखों की है तो लड़कों को क्यों छूट दी गई? इन सवालों का जवाब साफ है–समस्या मोबाइल नहीं, महिलाओं पर नियंत्रण की चाह है।

> **पुराने फरमान और सामाजिक आदेश (सुंधामाता पट्टी का इतिहास)**
>
> **1990 - महिलाओं की सार्वजनिक सभा में भागीदारी पर प्रतिबंध**
>
> **2005 - बहू-बेटियों के लिए सामाजिक निगरानी**
>
> **2010 - सार्वजनिक माफी और आलोचना**

विडंबना यह है कि यह फरमान 26 जनवरी से लागू होगा। जिस दिन संविधान को अपनाने का उत्सव मनाया जाता है, उसी दिन 15 गांवों की महिलाएं जानेंगी कि उनके अधिकार कागज़ों में सिमट गए हैं। अगर प्रशासन चुप रहता है तो यह चुप्पी नहीं, सहमति मानी जाएगी।

सुंधामाता पट्टी का यह निर्णय सुधार नहीं, नियंत्रण की राजनीति है। अगर इसे रोका नहीं गया तो समाज यह मान लेगा कि महिलाओं की आज़ादी पर प्रहार सामान्य बात है। यह फैसला लोकतंत्र की आत्मा पर सीधा हमला है और यह दिखाता है कि कुछ पंचायतें आज भी खुद को संविधान से ऊपर समझती हैं।

–मणिमाला शर्मा,
वरिष्ठ पत्रकार।

युवाओं के लिए सीखने और सीखाने की ईच्छा शक्ति की मिसाल बने 'डॉ. एसके पाठक'

> **गैल गैस से सेवानिवृत और आरएसजीएल जयपुर के पूर्व प्रबंध निदेशक डॉ. एसके पाठक गत दो वर्ष से मैसाचुसेट्स डार्टमाउथ यूनिवर्सिटी युवाओं को सप्लाई चैन व्यवस्था की शिक्षा दे रहे हैं**

डॉ. एसके पाठक

जयपुर। डॉ. एसके पाठक ने 36 साल के केरियर के बाद 62 की उम्र में न्यूयार्क में क्लासरुम चुना और 64 की उम्र में वहीं अध्यापन आरंभ किया। यह सीखने और सीखाने की ईच्छा शक्ति का ही परिणाम है। गैल गैस से सेवानिवृत और आरएसजीएल जयपुर के पूर्व प्रबंध निदेशक डॉ. एसके पाठक गत दो वर्षों से मैसाचुसेट्स डार्टमाउथ यूनिवर्सिटी युवाओं को सप्लाई चैन व्यवस्था की शिक्षा दे रहे हैं। यह उल्लेखनीय इसलिए है कि डॉ. पाठक ने सेवानिवृति के बाद 62 की उम्र में मैसाचुसेट्स डार्टमाउथ यूनिवर्सिटी में प्रबंधन की शिक्षा लेने के लिए एमबीए की डिग्री के लिए प्रवेश लिया और आज इसी विश्वविद्यालयों में एमबीए के छात्रों को बिजनेस मैनेजमेंट का पाठ पढ़ा रहे हैं, बल्कि भारतीय प्रतिभा के रुप में देश का नाम रोशन कर रहे हैं।

डॉ. पाठक का कहना है सीखने की कोई उम्र नहीं होती और इसी का परिणाम है कि आईआईटी रुडकी से 1984 में ग्रेजुएशन करने के बाद 36 साल तक गैल गैस और इसी दौरान संयुक्त उपक्रम में मुख्य कार्यकारी अधिकारी के रुप में सेवाएं देते हुए उपलब्धियों के नए आयाम बनाये। संस्थान के कार्य को गति दी, लाभदायकता बढ़ाई, युवाओं को रोजगार के अवसर उपलब्ध कराये। सबसे खास बात यह कि शानदार उपलब्धियों भरी 36 साल की सेवा अवधि पूरी करने के बाद कार्यालयीय सेवाओं से अलग हटकर एक बार वापिस विद्यार्थी बनने का संकल्प लिया और मैसाचुसेट्स डार्टमाउथ यूनिवर्सिटी में एमबीए के लिए दाखिला लिया। युवाओं के बीच अति युवा बन कर अध्ययन करते हुए 3.83/4.00 जीपीए के साथ एमबीए ग्रेजुएशन पूरा किया और फिर यहां पर ही संकाय सदस्य बन कर युवाओं को सर्टिफाइड मैनेजमेंट एक्सपर्ट के रुप में सप्लाई चैन की बारिकियां सिखाना शुरु किया।

डॉ. पाठक का कहना है कि यह एक अलग तरह का ही अनुभव है। युवाओं से सीखने का भी अवसर मिल रहा है तो सिखाने का अवसर भी प्राप्त हो रहा है। युवाओं से तकनीक, एआई आदि सीख रहे हैं तो न्यूयॉर्क में मर्सी यूनिवर्सिटी में मशीन लर्निंग एआई एप्लाइड स्टैटिस्टिक्स, मैनेजिरियल एनालिटिक्स, कोडिंग और प्रोजेक्ट मैनेजमेंट पढ़ा रहे हैं। इनोवेटिव सर्टिफिकेट प्रोग्राम बनाए हैं और छात्रों की पढ़ाई को बेहतर बनाने के लिए आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस पॉडकास्ट का इस्तेमाल शुरू किया है।

डॉ. पाठक की सीखने और सीखाने की ललक का ही परिणाम है कि पहले पढ़ाई फिर शानदान केरियर और फिर कुछ नया सीखने की ललक न्यूयार्क ले गई और उसके बाद 64 साल के युवा बने रहने के लिए युवाओं को ज्ञान प्रदान करना जीवन का हिस्सा बनाया है।

व्यक्तित्व को समृद्ध करने में पुस्तकों का अहम योगदान : डॉ. घासीराम वर्मा

> **प्रयास संस्थान की पुस्तक परियोजना अंतर्गत ''प्रयास पुस्तक उपहार योजना'' का शुभारंभ**

जयपुर। पुस्तकें व्यक्ति को समय के साथ रखते हुए सुदृढ़ व्यक्तित्व के गढ़ने का सशक्त माध्यम है, जो व्यक्ति पुस्तकों से जुड़ा हुआ है, उसके सोचने और समझने का नजरिया ही अलग होता है। ज्ञान व्यक्ति के सर्वांगीण विकास मे सहायक होता है। यह विचार शिक्षाविद् डॉ. घासीराम वर्मा ने झुंझुनू में प्रयास संस्थान की पुस्तक परियोजना अंतर्गत ''प्रयास पुस्तक उपहार योजना'' का शुभारंभ कर लोगो का विमोचन करते हुए व्यक्त किए। अमेरिका में प्रोफेसर रहे 98 वर्षीय डॉ. वर्मा ने कहा कि इस योजनांतर्गत प्रयास संस्थान अंचल के पुस्तकालयों को समृद्ध करेगा, यह प्रसन्नता की बात है।

शिक्षाविद् डॉ. घासीराम वर्मा ने झुंझुनू में 'प्रयास पुस्तक उपहार योजना' का शुभारंभ कर लोगो का विमोचन किया

प्रयास संस्थान के अध्यक्ष और साहित्यकार डॉ. दुलाराम सहारण ने बताया कि संस्थान स्थानीय साहित्यकारों एवं राजस्थानी भाषा को प्राथमिकता में रखते हुए अंचल के पुस्तकालयों में जनसहयोग से क्रय की गई पुस्तकें उपहार स्वरूप भेंट कर पुस्तक संस्कृति को बढ़ावा देगा। इस अवसर पर विजयगोपाल मोठसरा, अशोक कुमाार डूडी, डॉ. कृष्णा जाखड़ आदि मौजूद रहे।

बीकानेर को कड़ाके की सर्दी का इंतजार

> **जिले में अधिकतम तापमान 23.8 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया, जो सामान्य से 0.6 डिग्री सेल्सियस अधिक रहा**

बीकानेर, (निसं)। बीकानेर में मौसम फिलहाल सामान्य बना हुआ है। पिछले 24 घंटों के दौरान अधिकतम और न्यूनतम तापमान में कोई बड़ा बदलाव नहीं देखा गया।

मौसम विभाग के अनुसार जिले में अधिकतम तापमान 23.8 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया, जो सामान्य से 0.6 डिग्री सेल्सियस अधिक रहा। न्यूनतम तापमान भी 9.4 डिग्री सेल्सियस रहा। बीकानेर में दो बार घने कोहरे के बाद अब हवा में ठंडक जरूर है लेकिन कड़ाके की सर्दी का इंतजार है। दिन के समय मौसम साफ बना हुआ है और हाल के दिनों में छाया रहने वाला कोहरा अब नजर नहीं आ रहा है। धूप निकलने से दिन में हल्की गर्माहट महसूस की जा रही है, जबकि सुबह और रात के समय ठंड का असर बना हुआ है।

मौसम विभाग के अनुसार आने वाले कुछ दिनों तक बीकानेर में मौसम लगभग इसी तरह बना रह सकता है। अधिकतम तापमान 23 से 25 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने की संभावना है, जबकि न्यूनतम तापमान 8 से 10 डिग्री सेल्सियस के आसपास दर्ज किया जा सकता है। सुबह-शाम हल्की सर्दी बनी रहेगी, वहीं दिन में तेज धूप के कारण तापमान में मामूली बढ़ोतरी हो सकती है। फिलहाल कोहरे की स्थिति बनने की संभावना कम बताई जा रही है। फिलहाल, बीकानेर में मौसम स्थिर है और अगले कुछ दिनों तक तापमान सामान्य दायरे में बने रहने का अनुमान जताया जा रहा है।

मौसम के बीच जिले के सभी स्कूलों में शीतकालीन अवकाश शुरू हो गया है। शिक्षा विभाग के अनुसार विंटर वेकेशन के बाद स्कूल 6 जनवरी को दोबारा खुलेंगे। छुट्टियों की शुरुआत से विद्यार्थियों और अभिभावकों को राहत मिली।

राजगढ़ धाम पर भक्तों ने कन्या भ्रूण हत्या रोकने और नशामुक्त का संकल्प लिया

अजमेर, (कासं)। श्री मसाणिया भैरवधाम चैरिटेबल ट्रस्ट, राजगढ़ के तत्वावधान में ग्राम राजगढ़ स्थित श्री मसाणिया भैरव धाम पर सर्वधर्म मनोकामनापूर्ण स्तंभ की 23वीं वर्षगांठ का महोत्सव मनाया गया। बाबा भैरव और मां कालिका के जयकारों से समूचा धाम गूंज उठा। इस अवसर पर लाखों श्रद्धालुओं की उपस्थिति ने आयोजन को महाकुंभ का स्वरूप दे दिया। महोत्सव के दौरान लाखों श्रद्धालुओं ने कन्या भ्रूण हत्या रोकने और नशामुक्त समाज के निर्माण का संकल्प लिया। इस अवसर पर बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ अभियान के तहत विशाल रैलियां निकाली गईं, जिनमें पंजाब, हरियाणा, राजस्थान सहित विभिन्न राज्यों से आए श्रद्धालु शामिल हुए।

धाम के प्रवक्ता अविनाश सेन ने बताया कि प्रातः मनोकामनापूर्ण स्तंभ पर पंडित चंद्रप्रकाश दाधीच, संजय, कुलदीप, हर्ष, रजत एवं देवेंद्र द्वारा वैदिक मंत्रोच्चार के साथ हवन-यज्ञ सम्पन्न कराया गया। यज्ञ की पूर्णाहुति के पश्चात मां कालिका एवं बाबा भैरव की गुरु आरती की गई। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य उपासक चम्पालाल महाराज तथा नसीराबाद विधायक रामस्वरूप लांबा द्वारा ध्वजारोहण से हुआ। महोत्सव में राज्यपाल हरिभाऊ बागड़े मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। उनके साथ केंद्रीय कृषि राज्य मंत्री भागीरथ चौधरी, विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी, जल संसाधन मंत्री सुरेश सिंह रावत सहित अनेक जनप्रतिनिधि, प्रशासनिक एवं पुलिस अधिकारी मौजूद रहे। श्रद्धालुओं की भारी भीड़ के कारण धाम एवं आसपास के क्षेत्रों में विशेष सुरक्षा एवं यातायात व्यवस्थाएं की गईं।

राज्यपाल हरिभाऊ बागड़े ने श्रद्धालुओं को संबोधित करते हुए कहा कि राजगढ़ धाम पर आकर उन्होंने जो अनुभूति प्राप्त की, वह अविस्मरणीय है। यह धाम केवल राजस्थान ही नहीं, बल्कि पूरे देश में सामाजिक चेतना का केंद्र बन चुका है। चम्पालाल महाराज द्वारा नशामुक्ति, बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ और जल स्वावलंबन जैसे अभियानों के माध्यम से समाज को नई दिशा दी जा रही है।

चम्पालाल महाराज ने अपने संबोधन में कहा कि जो श्रद्धालु सच्चे मन और श्रद्धा से मनोकामनापूर्ण स्तंभ की एक परिक्रमा करता है, उसकी मनोकामनाएं अवश्य पूर्ण होती हैं। उन्होंने कहा कि बाबा भैरव देने वाले हैं, लेने वाले नहीं। इसी भावना के चलते धाम पर वर्षों से भिक्षावृत्ति उन्मूलन का अभियान सतत रूप से चल रहा है।